Conf Proceedings

ROLE OF EDUCATION IN ENVIRONMENT PROTECTION AND CONSERVATION

NATIONAL SEMINAR

25th JAN, 2014

PROCEEDINGS

EDITOR-IN-CHIEF:
Dr. Deepti Bajpai

EDITORS:
Dr. Divya Nath
Dr. Anita Rani Rathore
Dr. Kishor Kumar

KMGPGC

KM. MAYAWATI GOVT. GIRLS POST GRADUATE COLLEGE
BADALPUR (GAUTAMBUDH NAGAR) U.P.-203207

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-89495-38-1

© K.M.G.G. P.G. College, Badalpur

Role of Education in Environment Protection and Conservation

Editor and Convener :

Dr. Deepti Bajpai

Organized & Published by

Km. Mayawati Govt. Girls Post Graduate College Badalpur
(Gautambudh Nagar) U.P.-203204

Note : Views expressed in the articles belong to the authors and the organizers and publisher are not responsible for them. Also, it is assumed that the articles have not been published earlier and are not being considered for any other journal.

Printer

Sahitya Sansthan, Ghaziabad

Scanned by CamScanner

रघुवंशमहाकाव्य के द्वितीय सर्ग में पर्यावरण चेतना

सुश्री नीलम शा
असि. प्रोफेसर, संस्कृत विभा
कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्याल
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र

भारतीय वाङ्मय की सर्वश्रेष्ठ विभूति, कविकुलगुरु महाकवि कालिदास की समस्त रचनाओं में पर्यावरण का विराट् उदात्त और व्यापक चिन्तन प्राप्त हो है। उनके काव्यों में प्रकृति की नानारूपिणी छवियों के नितान्त मनोरम एवं प्रभावशाली चित्र उपलब्ध हैं। जिनमें चिरपुरातन प्रकृति भी सर्वदा चिर नव परिलक्षित होती है। अतः तत्काव्यों को 'प्रकृतिकाव्य' कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं होगी। 'प्रकृति के चितेरे' महाकवि कालिदास ने प्रकृति का मनोरम अ मार्मिक चित्रण करते हुए उसके साथ जो भावपूर्ण तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित किये हैं, उनमें उनकी पर्यावरणीय चेतना पूर्णतः दृष्टिगोचर होती है, जिस उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा ही है।

प्रकृति में जो कुछ भी परोक्ष और अपरोक्ष यथा—पृथ्वी, सूर्य, वायु, आकाश, जल, अग्नि, वनस्पति, मृदा, पशु-पक्षी, मानव आदि हैं, वे सभी पर्यावरण का निहितार्थ है। क्योंकि व्युत्पत्यात्मक अर्थ में भी 'परि+आवरण' का अर्थ है—चारों ओर का घेरा। इस घेरे में सजीव और निर्जीव दोनों तत्व विद्यमान हैं। अतः पर्यावरण एक आवरण है, जो जीव जगत् को चारों ओर से आवृत्त किये रहता है—परितः आवृणोति जीव जगदिति पर्यावरणम्।

यद्यपि महाकवि कालिदास की समस्त कृतियों में इन दोनों पर्यावरणीय तत्वों का चिन्तन और संरक्षण की चेतना प्राप्त होती है। किन्तु एक शोधपत्र में कालिदास की समस्त कृतियों की तो क्या, मात्र एक कृति की भी पर्यावरणीय अवधारणा को उद्घाटित करना अत्यन्त दुष्कर है। इसी कारण से प्रस्तुत शोधपत्र में कालिदास के 19 सर्गात्मक रघुवंश महाकाव्य के भी केवल द्वितीय सर्ग को आधार बनाया गया है।

रघुवंश कालिदास की प्रौढ़तम प्रतिभा की प्रसूति माना गया है। कतिपय विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि संस्कृत आचार्यों ने महाकाव्य के जो लक्षण निर्धारित किये हैं, उनका स्रोत रघुवंश महाकाव्य ही है।[1] महाकाव्य लक्षण में 'प्रकृति वर्णन' भी समाहित है, जिसमें सन्ध्या, सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, दिन, प्रातःकाल, मध्याह्न, पर्वत, ऋतु, वन, समुद्र आदि का वर्णन महाकाव्यत्व हेतु आवश्यक है।[2] महाकवि कालिदास इसमें पूर्ण सफल हुए हैं। कालिदास के प्रकृतिवर्णन में कल्पना की नवीनता, कोमलता, भाव वैचित्र्य और सहृदयता प्राप्त होती है। उनकी प्रकृति मूक, चेतनाहीन अथवा निष्प्राण नहीं है। अपितु मानवों के सदृश सचेतन और सजीव वह उनके सुख-दुःख पर सम्वेदना प्रकट करती है। प्रकृति और मनुष्य का यह गम्भीर आत्मीयता बोध रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में अनेक सन्दर्भों में व्यक्त हुआ है।

रघुवंश के द्वितीय सर्ग में नन्दिनी की परिचर्या करने में दत्तसं राजा दिलीप ने वनगमन के समय जब अपने समस्त अनुचरों का त कर दिया, तब पार्श्वस्थ वृक्ष समूह स्वयं ही पक्षियों की ध्वनियों के ब से उनकी जयध्वनि करने लगे।[3]

अग्नि की प्रतिमूर्ति राजा दिलीप पर वायु से आन्दोलित लताओं ने पौरकन्याओं की भांति पुष्पों की वर्षा की।[4] लता गृ वनदेवताओं ने कीचक संज्ञक बांसों से उनका यशोगान किया।[5] ही नहीं छत्र चामर रहित राजा कहीं धूप से क्लान्त न हो जाये इ निर्झरों के सूक्ष्म जलकणों से पृक्त, पुष्पगन्ध से युक्त मन्दवायु भी दिलीप की सेवा में तत्पर है।[6] यहां वायु भी साधारण या प्रतिकू है, अपितु कालिदास ने उसके शीतल, मन्द, सुगन्ध रूप में अनुकूल रूप का ही ग्रहण किया है। इस प्रकार महाकवि कालि समस्त प्राकृतिक उपादान प्रस्तुत किए हैं, जो मानवीकृत रूप दिलीप के सुख-दुःख में सहायक हैं।

पर्यावरण संरक्षण की चेतना भी इस सर्ग में अनेकशः दृ होती है। धनुष धारण किये हुए राजा दिलीप की वन प्रदेश में पर भी हरिणियां स्वयं को रक्षित अनुभव करती हैं। यहां ही धनुर्धारी राजा दिलीप के निश्शंक भाव से दर्शन और निर्भयता है।[7] मानों उन हरिणियों को राजा के दयालु स्वभाव और धनुषधारण का ज्ञान हो। यहाँ संभवतः कालिदास यह संदे कर रहे हैं कि पशु-पक्षियों का रक्षण करना चाहिये, न कि स्वस्वा अथवा स्वसुख हेतु उनका शिकार।

पशुसंरक्षण का अप्रतिम उदाहरण राजा दिलीप द्वारा भी उपेक्षा करके नन्दिनी गाय की सेवा है। राजा नन्दि

Scanned by CamScanner